International Journal of Sociology and Humanities
www.sociologyjournal.net
Online ISSN: 2664-8687, Print ISSN: 2664-8679
Received: 01-01-2022, Accepted: 15-01-2022, Published: 31-01-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 29-31

वैश्वीकरण के युग में गाँधी के आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता

विमलेश यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
गाँधीजी की आर्थिक आयामों का संबंध व्यक्ति और समाज के उत्थान के साथ जुड़ा हुआ है। आपका मानना है कि जब तक हमारा समाज आर्थिक रूप से प्रभावशाली नहीं होगा तो उन्हें अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याएँ व्याप्त होंगी। गाँधी जी कहते हैं कि आर्थिक समानता की जड़ में धनिक का ट्रस्टीपन निहित है। समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए पूंजीपतियों एवं जमीदारों के पास जो अनावश्यक धन व भूमि है, उसको प्राप्त कर उन्हें सामाजिक संरक्षण के रूप में रखा जाए, जिसका उपयोग निर्धन लोगों के लिए हो। इस प्रकार गाँधी की आर्थिक चिंतन द्रवित नैतिकता की बुनियाद पर टिकी हुई है जिसमें मानव के शोषण की गुंजाइश नहीं है।

मूल शब्दः वैश्वीकरण, आर्थिक चिंतन, प्रासंगिकता

प्रस्तावना
हजारों वर्षों की सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रतीक एवं भारतीय गणराज्य के निर्माता राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी दार्शनिक पृष्ठभूमि में प्लेटो के समान थे। प्लेटो की भांति गाँधी ने भी जीवन दर्शन को प्रभावित करने वाले सभी पहलुओं पर चिंतन–मनन एवं क्रियान्वयन किया। संसार के तिमिर का नाश करने के लिए मानव इतिहास में गाँधी जी प्रकाश पुंज की भांति आए थे। उनका जीवन कथनी का नहीं, करनी का था। वे उपदेशक नहीं सत्यशोधक थें।[1]
सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय की हिमायत करता है, वह समान भाव से सब की भलाई का, जिसमें कमजोर भी शामिल हैं प्रयत्न करता है, जो सभ्यजनोचित सुंदर जीवन के लिए है। गाँधी स्वयं में एक बड़े अर्थविज्ञानी के रूप में प्रस्तुत होते हैं। उनकी सोच उन गरीब बेसहारा लोगों की आर्थिकता से जुड़ी है जो आज की 'विकास व्याख्या' में शामिल नहीं है। आज की 'वर्चुअल इकोनामिक पॉलिसीज' को 'आवारा पूंजी' के खेल पर निर्भर मानते हैं, इसलिए गाँधी इसे स्वीकार नहीं करते, आप श्रम पर आधारित पूंजी के विकास की बात करते हैं, जिसका लाभ ग्रामीण किसान व मजदूर भी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। गाँधी जी पूंजी के मर्म को बखूबी जानते हैं, केंद्रित पूंजी तो हिंसा का कारक है उसे मुनाफे के सिवाय और कुछ भी नहीं चाहिए, वह 'मनुष्य के विकास' न चाहकर 'पूंजी के विकास' पर केंद्रित है। गाँधी जी का आर्थिक चिंतन 'सर्वजन–हिताय सर्वजन सुखाय' के आधार पर उत्पादन के गुलाम होने की वजाय ये वास्तविक सुखपूर्वक जीवन जीने का है।[2]

शोध लेख का उद्देश्य
1. आज के युग गाँधी जी के आर्थिक विचारों की सार्थकता को जानना।
2. ट्रस्टीशिप (संरक्षकता) की अवधारणा को समझना।
3. गाँधी जी का आर्थिक दर्शन जानने का प्रयास।
4. स्वराज्य का मार्ग क्या बताया।

शोध लेख में प्रयुक्त शोध पद्धति
इस लेख को लिखने में वर्णनात्मक व ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है साथ द्वितीयक तथ्यों के रूप में शोध पत्रिका व लेखों का सहारा लिया गया है।

वैश्वीकरण का अर्थ
वैश्वीकरण से तात्पर्य क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं का विश्व स्तर पर रूपांतरण से है। अर्थात यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक साथ कार्य करते हैं। [3]
वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व में वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि हुई है। वैश्विक गांव एवं बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में गाँधीवाद की प्रासंगिकता और बढ़ गई है।

गाँधी जी का आर्थिक चिंतन दृष्टिकोण
गाँधी जी के आर्थिक विचार थे कि भारत गाँव में रहता है, शहरों में नहीं । इनको उत्पादक रोजगार देना होगा जिससे ये स्वावलंबी बन सकें। गाँधी जी शहर प्रधान भारत की अपेक्षा ग्राम प्रधान भारत और जडयन्त्रों की अपेक्षा जीवित यंत्रों की वकालत करते हैं। वे लघु कुटीर उद्योग के साथ–साथ स्वावलंबन के लिए न केवल सामाजिक ढाँचा बनाना चाहते थे, बल्कि मनुष्य को मनुष्य के रूप में जरूर देखना चाहते थे। वे गुलामी के खिलाफ होकर स्वःश्रम से अपनी आर्थिक स्थिति

सुधारने की सलाह देते थे। आपका ग्राम–स्वराज आर्थिक स्वराज का ही आधार था जिसमें सब का दर्जा एक हो। मजदूरी करने वाले वर्ग व स्वघोषित सभ्य समाज का दर्जा एक हो। पूंजी और मजदूरी के बीच के झगडे बिल्कुल समाप्त हों। गाँधीजी की दृष्टि से पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था ऐसी हो कि किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पडे। आर्थिक समानता यानि सब के पास इतनी संपत्ति हो कि वे अपनी कुदरती आवश्यकताएँ पूरी कर सकें। [4] गाँधी जी स्पष्ट कहते हैं कि आर्थिक समानता की जड में धनिक का ट्रस्टीपन निहित हैं। गाँधी जी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा एक बड़ी आर्थिक मानवाधिकारवादी अवधारणा साबित होती है, क्योंकि वे न केवल धन के ठहराव को समाप्त करना चाहते थे बल्कि मनुष्य को वालंटियर (स्वंयसेवक) भी बनाने की कोशिश करते हैं। उनकी दृष्टि में " जब मनुष्य अपने आपको सेवक मानेगा, समाज की खातिर धन कमाएगा, समाज के कल्याण के लिए खर्च करेगा तब उसकी कमाई में शुद्धता आएगी। आर्थिक समानता के पक्षधर गाँधी जी धनिकों से उनका धन अन्य समाजवादियों की तरह न तो बलपूर्वक छीनने के पक्ष में थे न हीं वर्गसंघों के पक्षधर थे। आर्थिक विषमता की खाई पाटने के लिए उन्होंने "संरक्षकता का सिद्धांत' दिया, जिसके द्वारा धनिकों को अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने व समाज हित में अपनी अतिरिक्त संपत्ति के त्याग की प्रेरणा दी। 'संरक्षकता का सिद्धांत' धन उत्पन्न करने और उसका संग्रह करने की इच्छा करने वाले लोगों को स्वयं अपने ही संग्रहित धन का ट्रस्टी बनकर जहां एक ओर उन्हे स्वामित्व का सुख प्रदान करता है, वहीं इस धन का उपयोग समाज कल्याण में करने की बात कहकर उनकी धार्मिक भावना को भी मजबूत करता है।

गाँधीवादी अर्थशास्त्र मे संरक्षकता (ट्रस्टीशिप) के सिद्धांत से तात्पर्य अतिरिक्त धन को किसी के संरक्षण में रख देना। इसमें समानता का भाव निहित है जो गांधी जी के आर्थिक दृष्टिकोण को समर्पित है। आपका कहना है कि उचित आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद जो भी धन बचे उसको पूजा की ओर से संरक्षण के रूप में धनी व्यक्ति अपने पास रखे, वह स्वयं को अपना सेवक मानकर जनहित में कल्याणकारी कार्य हेतु खर्च करे। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति जन कल्याण के लिए भी तक धन कमाये तो वर्ग संघर्ष की कोई संभावना शेष नहीं रहेगी। आप यह मानते थे कि धनवान लोग ईमानदारी से चाहे करोडों रुपए कमायें, किंतु उनका उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि कमाया हुआ धन समाज की आवश्यकतानुसार समर्पित करने के लिए तैयार भी रहें।

संरक्षकता (ट्रस्टीशिप) के सिद्धांत की मूलभूत भावना यही है कि जो धन पूंजीपति के पास है वह समाज की धरोहर है, इसलिए पूंजीपति को उसका उपभोग व्यक्तिगत लाभ या आराम के लिए नहीं, समाज कल्याण के लिए करना चाहिए। इस प्रकार गाँधी जी की आर्थिक सोच उन गरीब बेसहारा लोगों की आर्थिक स्थिति से जुड़ी है, जो आज के विकास की नई व्याख्या में शामिल नहीं हैं।

गाँधी जी अपने आर्थिक विचारों में वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग सहयोग की अवधारणा में विश्वास करते थे। आपका कहना था कि पूंजीपति व श्रमिकों के हित परस्पर विरोधी नहीं हो सकते। यदि इनमें पारस्परिक सहयोग एवं सामूहिक प्रयास किए जाए तो अर्थव्यवस्था को उच्च शिखर पर पहुंचाया जा सकता है। [5]

गाँधी जी के आर्थिक दर्शन का यदि मूल्यांकन करें तो वास्तविक मॉडल क्या होना चाहिए और अहिंसक आर्थिक ढाँचा तैयार करने का मानदण्ड क्या है? इसका पूर्णतया ज्ञान हो जाएगा। गाँधी सर्वोदय के हिमायती थे और सर्वोदय का अर्थ ही होता है– 'सबका उदय', 'सबका भला', 'सबका विकास'। सर्वोदय समाज–व्यवस्था मानवमात्र के कल्याण के लिए विकसित की गई समाज रचना है। यह गाँधी के आर्थिक–दर्शन को विकसित करती हैं क्योंकि गांधी जी ने प्रत्येक काम के लिए समान मूल्य को सर्वोदय का आदेश बनाया, समन्वय ही सर्वोदय की नीति है, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश, जल और वायु सबके लिए समान रूप से उपलब्ध हैं, उसी प्रकार ईश्वर के द्वारा दी गई सभी चीजों पर सब का समान अधिकार है। 'सर्वोदय' का दर्शन समग्र जीवन के लिए है। ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, पूंजीपति और मजदूर, सबको समान सुविधायें मिले, जो ऊँचा है वह थोड़ा नीचे खिसके, नीचा थोड़ा ऊपर जाये और इस प्रकार मध्य में सबमें साम्यता हो, जो भोजन की अभाव में दुर्बल है उसे पोस्टिक भोजन मिले और जिसे अधिक खाने से अजीर्ज (अपच) हो गया है उसके लिए कटु औषधि का प्रबंध हो यही सर्वोदय की विचारधारा है। भूमिदान, संपत्तिदान और जीवनदान सर्वोदय समाज की स्थापना के आधार हैं। [6]

गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा संबंधी विचारों में भी आर्थिक नजरिया की छाप दिखाई देती है क्योंकि बुनियादी शिक्षा समानता पर आधारित अमीर–गरीब, ऊँच–नीच के भेद से मुक्त है। इस शिक्षा का संबंध आधारभूत शिल्पकारी तथा चुने हुए शिल्प की शिक्षा देकर अच्छा शिल्पी बनाकर स्वावलंबी बनाया जाए, शिल्प की शिक्षा इस प्रकार दी जाये कि बालक उसका सामाजिक व वैज्ञानिक महत्व को समझे। इस शिक्षा व्यवस्था में क्रिया द्वारा शिक्षा दी जाती है इसमें हस्तकला अलग विषय ना होकर उसी के माध्यम से सब विषय पढ़ाए जाते हैं। यह स्वतंत्र विकास का अवसर देती है, इस बुनियादी शिक्षा में स्थानीय उत्पादन उद्योगों के माध्यम से ऐसी शिक्षा दी जाती है जो नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कर सकें। इसलिए गाँधी जी ने बहुत ही सुंदर शब्दों में कहा था कि, "चरखा एक यंत्र भर नहीं बल्कि हिंदुस्तान का कंगालियत मिटाने का एक अस्त्र है। बताने की आवश्यकता नहीं कि जिस रास्ते में भुखमरी मिटेगी स्वराज्य भी उसी रास्ते से आएगा। गांधी जी का स्वराज निर्धन का स्वराज्य है जो दीनदुखियों के लिये नया रास्ता खोलता है"।

इस प्रकार संपूर्ण आर्थिक विचारों में कहा जा सकता है कि, गाँधी की आर्थिक दृष्टि कोई साफगोई से रखी जाने वाली भूमंडलीकृत युग की आर्थिक संरचना नहीं है बल्कि आर्थिक मानवाधिकारों का एक गतिमान व स्थायी आग्रह है साथ ही साथ मनुष्य की गरिमा की हिफाजत का अनुरोध भी है। [7]

वैश्वीकरण के युग में गाँधी की आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

यद्यपि गाँधी जी की कही बातों में एक सदी का अंतर है परंतु उनके विचार आज भी उपयोगी है। नई प्रौद्योगिकी से उत्पादन में वृद्धि हुई हैं लेकिन रोजगार में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है। भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले देश में मानव संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं लेकिन नई प्रौद्योगिकी ने श्रमिकों को बेकार बना दिया है, जिससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। इस माहौल में गाँधी जी का आर्थिक विकेन्द्रीकरण व कुटीर उद्योग धंधों की नीति मार्ग दिखा सकती है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि वैश्वीकरण ने पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित किया है। गांधी जी ने कुटीर धंधों का समर्थन किया

था और बड़े उद्योगों का विरोध किया था। आज विश्व भर में ओद्यौगिककरण को ही पर्यावरण के लिए हानिकारक माना जा रहा है। यही वजह है कि आज गाँधी जी के अनुरूप परंपरागत तकनीक तथा सतत् विकास पर जोर दिया जा रहा है। इस संदर्भ में गाँधी जी का कहना था कि "धरती के पास सभी जरूरतो को पूरा करने के लिए प्रयाप्त संसाधन हैं किंतु किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।" 8

निष्कर्ष

उपरोक्त विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गाँधी जी के आर्थिक विचारों में मानवता सर्वोपरि स्थान ग्रहण करती है। आज के इस वैश्विक दौर में भी घरेलू उत्पाद तथा विकास से संबंधित सूचकांक तभी मायने रखते हैं जब उनसे समाज के कल्याण का लक्ष्य पूरा हो रहा हो। इस संदर्भ में गुन्नार मिर्डल का कहना है कि "भारत का उद्धार और आर्थिक प्रगति का एकमात्र रास्ता गांधीवाद है।"

संदर्भ ग्रंथ

1. कुमारी अनुराधा, राधा कमल मुखर्जीः चिंतन परंपरा, जनवरी–जून 2011
2. गाँधी, एम० के० 'हरिजन', 9 अक्टूबर, 1937
3. वैश्वीकरण, http;//hi.m.wikipedia.org
4. गाँधी महात्मा, यंग इंडिया, 15 नवंबर, 1928
5. गाँधी जी का आर्थिक दर्शन, http;//www.mpgkpdf.com, 2021/06
6. कुमार, आनंद, सामाजिक विचारों का इतिहास, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली,
7. त्रिपाठी, कन्हैया, गाँधी की आर्थिक दृष्टि, योजना, अक्टूबर 2008
8. सिंह सीमा, वैश्वीकरण के दौर में गाँधीजी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता, International journal of applied research, 2017, 3(8)